स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग   दिनांक-13-5-2020

द्वितीय सेमेस्टर

WK 21 139-226

MONDAY 19 MAY

14 JUNE

1

ऊधो! मन माने की बात।
जरत पतंग दीप में जैसे, औ फिरि फिरि लपटात॥

रहत चकोर पुहुमि पर, मधुकर! ससि अकास भरमात।
ऐसो ध्यान धरो हरिजू पै छन इत उत नहिं जात॥

दादुर रहत सदा जल-भीतर कमलहिं नहिं नियरात।
काठ फोरि घर कियो मधुप पै बँध्यो अंबुज के पात॥

बरषा बरसत निसिदिन, ऊधो! पुहुमी पूरि अघात।
स्वाति-बूँद के काज पपीहा छन छन रटत रहात॥

सेहि न खात अमृतफल भोजन तोमरि को ललचात।
सूरज कृष्ण कूबरी रीझे गोपिन देखि लजात॥138॥

व्याख्या :- विद्यार्थियों इस पद में भी गोपियों का कथन है और अपने एकाग्र प्रेम की स्थापना हेतु तर्कों की झड़ी लगा दी गयी है। यहाँ संदेशवाहक ऊधव जी को सम्बोधित करती हुई गोपियाँ कहती हैं कि आपको जो कहना है कह लें, जो समझाना है समझाते रहें पर मैं उसे मानूँ यह सम्भव नहीं है क्योंकि यह मेरे मन की बात है, मन जिसे नहीं मानता है वह मैं नहीं सुनूँगा। यहाँ भी संसार का उदाहरण देते हुए

2

कहती है कि पतंगा दीपक के पास जाने पर जलने लगता है परंतु उसका वहाँ जाना बंद नहीं होता है, एक नहीं हजारों की संख्या में वह दीपक के पास जाता है और अपने प्राण गँवाता रहता है। उसकी परंपरा सदियों से चली आ रही है। दूसरा उदाहरण चकोर का देती है कि उसका निवास स्थान तो पृथ्वी तल है परंतु वह प्रेम वह चाँद से करता है, एकटक चाँद को देखता रहता है परंतु चाँद एक जगह स्थिर होकर ध्यान नहीं देता है। न इसका देखना बंद होता है न ही उसका भ्रमण बंद होता है।

गोपियाँ निर्णयात्मक रूप में कहती है हम सभी अपने हृदय में श्रीकृष्ण को बैठाये हुए हैं और एक क्षण के लिए भी उसका मन इधर-उधर नहीं जाता है। अगला उदाहरण वह मेंढक का देती है। वह कहती है कि जिस तालाब में वह रहता है उसी तालाब में कीचड़ और कमल दोनों रहता है परंतु मेंढक हमेशा कीचड़ में ही लिपटा रहता है, भूलकर भी कमल के पास नहीं जाता। कीचड़ की गंदगी और कमल

सौंदर्य से उसका कोई लेना-देना नहीं रहता है,
क्योंकि जिसके साथ रहना अच्छा लगता है वह उसी में जीवन भर
लिपटा रहता है कमल के पास .. कदापि अपना ध्यान
नहीं पहुंचाता है। यह है अनन्य प्रेम।

वह कहती हैं कि भौंरे को तो आपने देखा ही होगा,
उसके दांत बड़े मजबूत होते हैं वह कठोर काठ में छेद करके
उसमें अपना घर बना लेता है, वह निवास भी उसी में
करता है परंतु वह काठ से प्रेम नहीं करता है। उसका प्रेम
तो कमल से होता है, पूर्ण समर्पण कमल के प्रति होता
है। भँवरा रस प्राप्त करने के लिए कमल की पंखुड़ियों में
घुस जाता है, तन्मय होकर रस चूसता जाता है और सूर्यास्त
का समय हो जाता है, प्रकृति के अनुसार कमल की पंखुड़ियाँ
बंद हो जाती हैं पर भौंरे की तन्मयता कम नहीं होती है,
और वह उसमें रात भर बंद रहता है और प्रातः
सूर्योदय के बाद ही उसमें से निकलता है। एक बार भी
वह अपने पैने दाँतों का प्रयोग कमल की कोमल पंखुड़ियों
को काटने और बाहर निकलने का प्रयास नहीं करता है।

4

वाह रे! प्रेम।

आगे उन्मन जी को सम्बोधित करती हुई कहती हैं कि बरसात के दिनों में आर्द्रा से लेकर के हस्ति नक्षत्र तक झड़ी लगी रहती है, धरती तृप्त हो जाती है, जलमग्न हो जाती है परंतु पपीहे की प्यास नहीं बुझती है, वह तो अपना मुँह भी नहीं खोलता है कि उसमें वर्षा की बूँद जा सके। पूरे बरसात की समाप्ति के बाद स्वाति नक्षत्र आता है जिसमें वर्षा होने की सम्भावना बहुत कम रहती है तब जाकर पपीहे की बूँद की चाहत की रट प्रारंभ होती है। संयोगवश कभी-कभी स्वाति में भी बूँदें गिरने लगती हैं, वह भी हर वर्ष नहीं, तब जाकर पपीहे की रट समाप्त होती है नहीं तो उसका पी कहाँ- पी कहाँ की रट लगी ही रह जाती है। गोपियाँ यहाँ उदाहरण साहित्य नामक जन्तु की चर्चा को करती हैं, उसकी प्रकृति है कि अमृत के समान फल सेब, अंगूर, नासपाती खाकर उतने फल नहीं खाते

WK 21 143-222
FRIDAY
MAY
23
14 JUN

है और उसे निःस्वाद लौकी खाना अच्छा लगता है। यह उसके मन मानने की ही तो बात है।

हमारा कृष्ण भी उसी तरह हमारे पवित्र प्रेम की परवाह नहीं कर रहा है और कुबरी दासी के प्रति आकृष्ट हो गया है। वह तो कृष्ण को सूर्य के समान मानती है उसे तो कमल रूपी हमलोगों के मन को खिलाना चाहिए था परंतु वह असुंदर कुबरी के प्रति रीझा हुआ है।

इसमें अलंकार की छटा भी देखने को मिलती है। जहाँ सामान्य कथन के लिए विशेष कथन किया गया है वहाँ अर्थांतरन्यास अलंकार है। अंतिम पंक्ति में कुब्जा की चर्चा की गयी है वहाँ असूया संचारी भाव की शोभा देखने को मिलती है। इसी पंक्ति में हरण-हरण शब्द आया है इसमें पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार भी समाहित है।

कुमार रजनीकान्त रंजन
13/5/2020

2014